Dr. Priti Ranjan
H. D. Jain College (Ara)
Deptt of History

B. A Part. II

paper - III

Topic - Harshvardhan II

हर्ष के शासन काल में कर बहुत कम लगाता था। केन्द्रीय सरकार ने स्थानीय सरकार को सर्वभौमिकता दे रखी थी। राज्य की आय का प्रमुख साधन भूराजस्व था। जो उपज का 1/6 भाग लिया जाता था। भूमि के माप एवं प्रवेक्षण सम्बन्धित अधिकारी को प्रमाता कहा जाता था। उपज की वृद्धि के लिए सिंचाई की व्यवस्था थी। राजकीय आय के प्रमुख साधन चुंगी तथा आयात कर थे। हर्ष के अभिलेखों में कुछ वस्तुओं पर लिए जाने वाले कर का भी उल्लेख मिलता है। भाग एवं भोग आदि पर भी कर लिए जाते थे।

आय का साधन: राज्य की आय को चार भागो में खर्च किया जाता था एक भाग सरकारी खर्च द्वारा भाग धार्मिक कार्यों में तीसरा उच्च वर्ग के सरकारी पदाधिकारियों को धन देने में तथा शेष भाग को विद्वानों एवं विभिन्न सम्प्रदाय को पुरस्कार एवं उपहार देने में खर्च किया जाता था।

हर्ष ने एक बुद्धिमता पूर्ण साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण कर अपने काल के सहायक राजाओं के साथ संतुलित संबंध कायम रखा। देवहूति के अनुसार उस समय अनुमानतः 20 ऐसे राजा थे जो हर्ष को उपहार देते थे। कुछ राज्यों के साथ वैवाहिक संबंध भी कायम किया गया। कुछ तो हर्ष से अनुमति लेकर ही भूमि अनुदान कर सकते थे परन्तु कुछ ऐसे राज्य भी थे। जिन्हें अधिक सार्वभौमिकता प्राप्त थी। इस प्रकार हर्ष ने परि-स्थिति के अनुकूल अपनी नीति का निर्धारण कर अपनी साम्राज्यवादी व वैदेशिक नीति द्वारा साम्राज्य को बाह्य खतरे से मुक्त कर स्थापित प्रदान किया।

ठीक इसी तरह चलते हुए हर्ष ने एक विशाल सेना का सर्जन कर राज्य में आंतरिक स्थायित्व तथा वैदेशिक आक्रमण से मुक्ति का प्रयास किया। अनाधिकृत राज्यों आभ्यांतर संभाव विद्रोहों और बाह्य आक्रमणों से साम्राज्य को सुरक्षित (सुरक्षित) रखने के लिए हर्ष ने सेना का भी संगठन किया।

ह्वेनसांग के अनुसार हर्ष ने साम्राज्य विस्तार के पश्चात् अपनी सैनिक शक्ति में वृद्धि की। उसने गजसेना की संख्या 70,0000 और अश्व सेना की संख्या 1,000000 कर दी। स्थायी सेना की कुल संख्या 6 लाख थी। हस्ती सेना का स्रोत मगध का जंगल था। सेना का विभाजन पैदल, अश्व रथ और गज किया गया था। देवभूति के अनुसार हर्ष के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि उसकी सेना में नाव भी सम्मिलित थे। सेना को नकद वेतन एवं पुरस्कार पर बहाल किया जाता था।

हर्ष ने एक दूरदर्शी का पूर्ण वैदेशिक नीति का भी अनुसरण किया। क्योंकि सेना ही किसी राज्य की सुरक्षा के लिए एक मात्र गारंटी नहीं है। अतः इसी उद्देश्य से उसने असम के भास्कर वर्मा से संधि की तथा वलभी से वैवाहिक संबंध स्थापित किया। इतना ही नहीं उसने चीनी सम्राट काई-शुंग के ~~स्थान~~ साथ दूत का आदान-प्रदान भी किया।

अतः राधा कुमुद मुखर्जी के अनुसार हर्ष ने रेकार्डस एवं आर्केइब्स के लिए अलग विभाग का गठन किया, जो अक्षपटलिक (रकार्ड रक्षक) के अधीन था। राज्य की उन्नति एवं विपदा का वर्णन भी इसमें किया जाता था। इससे भी हर्ष के प्रशासन की विशेषता अभिव्यक्त होती है। परन्तु इन विशेषताओं के बावजूद हर्ष के प्रशासन तंत्र एवं नीतियों में हमें कुछ त्रुटि देखने को मिलती है। सबसे पहली बात यह है कि हर्ष की दानशीलता के कारण राज्य की वित्तिय स्थिति दयनीय हो गई।

प्रत्येक 5 वर्षों पर प्रयाग में महामोक्ष परिषद के आयोजन गरीबों को मोक्ष भिक्षा, धार्मिक अनुष्ठान इत्यादि कार्यों में हर्ष प्रत्येक 5 वर्षों पर अपना खजाना खाली कर देता था। हर्ष के पास एक विशाल सेना थी। उसका साम्राज्य चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य से होता था। परन्तु इतनी बड़ी सेना करीब 2 उसके बराबर थी, इतनी बड़ी सेना ने देश की वित्तीय स्थिति को जरूर कमजोर कर दिया होगा।

इसी हर्ष के प्रशासकीय परिभ्रमण में भी धन का अपव्यय होता है। इस अवसर पर भव्य भवन का निर्माण होता था। और उसमें सब तरह के सुख-सुविधा की व्यवस्था की जाती थी। जिसमें काफी अधिक धन खर्च होता था। हर्ष ने अपने मंत्रियों एवं पदाधिकारियों को नकद वेतन की जगह भूमि अनुदान की नीति का ~~अनुकरण~~ अनुसरण किया। एक बौद्ध विद्वान जैसेन को उड़ीसा में 80 गाँवों का राजस्व दे दिया। हर्ष की इस नीति के कारण सामंतवादी प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला। जो राज्य की उन्नति के लिए घातक सिद्ध हुआ। और साम्राज्य में विघटनकारी शक्तियाँ सक्रिय होने लगी।

चौथा हर्ष के पुलिस विभाग जनता के आने-जाने की रक्षा में पूर्णतया सफल नहीं रहा क्योंकि ह्वेनसांग दो उदाहरणों का उल्लेख करता है जिनमें वह डाकुओं के द्वारा लूट लिया गया था।

निष्कर्ष

अतः हर्ष भारत के महान शासकों में एक था। वह एक आदर्श व्यक्ति था। ~~वह एक आदर्श~~ वह एक महान विजेता भी था उसमें पर्याप्त मात्राओं में सैनिक गुण विद्यमान थे। प्रो० R.K मुखर्जी ने कहा है कि हर्ष के चरित्र में अशोक तथा समुद्रगुप्त दोनों के गुणों का समन्वय था। इन्होंने भी समुद्रगुप्त की तरह विभिन्न दिशाओं में विजय प्राप्त कर सम्राट का पद प्राप्त किया। युद्ध को सदा के लिए तिलांजली देकर अपनी सम्पूर्ण शक्ति को शान्ति और दान पुण्य के कार्यों में लगा दिया। इसलिए हर्ष अशोक और समुद्रगुप्त की तरह महान हो गया। स्वेच्छाचारी सम्राट होते हुए भी उसने अपनी शक्ति का प्रयोग कभी निरंकुश शासक के रूप में नहीं किया। वह अपनी सहिष्णुता उदारता दान और विभिन्न प्रतिभाओं की स्थापना के लिए हमेशा प्रसिद्ध रहेगा।